中国传统思想

परंपरागत चीनी विचारधारा

仁

http://www.purpleculture.net

中国人注重人与自然的和谐，在中国传统思想中，“天人合一”是一个主要的话题。中国传统思想更注重个人修养的提升，更关注“修身养性”，更为重视智慧的体悟而对逻辑推理不是特别在意。

可以说，中国有一套完整的影响了中国几千年的思想体系，而这套体系最重要的组成部分就是以孔子、孟子为代表的儒家思想和以老子、庄子为代表的道家思想以及佛学思想。其中，对中国影响最大、最深远的是儒家思想。

चीनी लोग मानव एवं प्रकृति के मेल पर बड़ा महत्व देते हैं, चीन की चिन्तन परंपरा में "प्रकृति व मनु की एकता" एक सर्वमान्य सिद्धांत है। चीनी विचार परंपरा में व्यक्तिगत चरित्र सुधार पर और अधिक ध्यान दिया जाता है और चरित्र-शुद्धिकरण का अधिक सम्मान किया जाता है, तर्क संगतता की तुलना में बुद्धिमता व बोध की उन्नति पर अधिक बल दिया जाता है।

कहा जा सकता है कि चीन में एक प्रकार की संपूर्ण विचारधारा व्यवस्था कायम हुई है जिस से हज़ारों वर्षों से चीन को प्रभावित किया जाता है। इस विचारधारा व्यवस्था के अहम भाग में कन्फ़्यूशियस, मान्शियस द्वारा प्रवर्तित कन्फ़्यूशियसवाद और लाओज़ी व ज्वांगज़ी द्वारा प्रतिपादित ताओवाद एवं बौद्ध धर्म सम्मिलित हैं, तीनों में से कन्फ़्यूशियसवाद का सब से व्यापक, दूरगामी और गहरा प्रभाव पड़ा है।

1 | 2 / 3 / 4

1. 老子
   लाओज़ी
2. 孟子
   मेन्शियस
3. 汉字 "禅"
   चीनी रेखाक्षर "छान(ध्यान)"
4. 龙门石窟佛像
   लुंगमन गुफ़ा की बुद्ध मूर्तियां

孔子

कन्फ़्यूशियस

孔子（公元前 551—公元前 479），名丘，字仲尼，鲁国人。中国春秋末期伟大的思想家和教育家，儒家学派的创始人。

孔子的远祖是宋国的贵族，殷王室的后裔。在孔子很小的时候，他的父亲就去世了，之后家境逐渐衰落。虽然孔子年轻的时候很贫困，但是他立志学习，他曾经说过：“三人行，必有我师焉。”后来，他开始授徒讲学，他一共教授了 3 000 多个学生，其中不乏贫困家庭的孩子，改变了以往只有贵族子弟才有资格上学的传统。孔子晚年还编订上古书籍，保存了很多古代的文献，我们现在看到的《诗经》《尚书》《周易》等都经过他的编订。

孔子的很多思想即使在今天看来也很有价值。比如，孔

子丰富了“仁”的内涵，他认为要做到“仁”，就要关爱别人，“己所不欲，勿施于人”；他还认为，“君子和而不同”，也就是说，在处理人际关系上要承认人与人之间的差异，不要用单一的标准来衡量对方，这样才能够达到社会的和谐与稳定；他在教育上还主张用启发的方法促使学生独立思考，在学习书本知识的同时还要有自己独立的见解；等等。

孔子的言行被他的弟子们收集在《论语》一书中，孔子的思想也被后人吸收和发扬光大，成为中国传统思想最主要的组成部分，并逐渐传播到周边国家，形成了影响范围很广的儒家文化圈。

孔子是属于中国的，他在中国家喻户晓，绝大多数中国人的思想都或多或少地受到他的学说的影响；孔子也是属于世界的，联合国教科文组织曾将他列为世界十大文化名人之一。

1 2 3

1、2. 孔子
कन्फ़्यूशियस
3. 孔庙供奉的孔子
कन्फ़्यूशियस मंदिर में कन्फ़्यूशियस की पूजा

कन्फ़्यूशियस

कन्फ़्यूशियस (551 --- 479 ईसापूर्व), जिस का व्यक्तिगत नाम छ्यो उर्फ जोंगनि था, वे लू राज्य के निवासी थे। वे चीन के वसंत -शरत काल के एक महान दार्शनिक, शिक्षाविद् और कन्फ़्यूशियसवादी पंथ के प्रवर्तक थे।

कन्फ़्यूशियस के पितामह सोंग राज्य के सामंत थे और ईंग राजा के वंशधर थे। किन्तु कन्फ़्यूशियस की बालावस्था में उस का पिता स्वर्ग वासी हुए और उस का परिवार धीरे धीरे दरिद्र होता चला गया। युवावस्था में निर्धन होने पर भी कन्फ़्यूशियस मेहनत से पढ़ते थे। उस की सुक्ति थी कि जब तीन व्यक्ति एक साथ हैं, तो एक न एक मेरा गुरु अवश्य है। वृद्धावस्था में उस ने निजी विद्यालय खोला और शिष्यों को पढ़ाने में जुटे।उस के कुल 3000 विद्यार्थी हुए, जिनमें अनेक गरीब थे। उस की इस कोशिश से तत्कालीन चीन में यह परंपरा खत्म हो गयी, जिस के तहत मात्र कुलीन व सामंत वर्गों की संतान शिक्षा पाने के हकदार थी। वृद्धावस्था में कन्फ़्यूशियस ने प्राचीन ग्रंथों का संकलन व संपादन करने का काम भी किया, जिस से बहुत से प्राचीनतम ग्रंथ संरक्षित किए गए। अब तक जो'गेय कविता संग्रह', 'दस्तावेज संग्रह' एवं 'चो राजा की भविष्यवाणी' उसी के हाथों संकलित संपादित हुए थे।

कन्फ़्यूशियस के बहुत से विचार आज भी प्रासांगिक मूल्य रखते हैं। उदाहरणार्थ, मानव

चरित्र के बारे में उस नेजो "रन" का सिद्धांत पेश किया था, उसकी यह शिक्षा है कि दूसरों को प्यार करने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए। स्वयं को जो पसंद नहीं है, उसे दूसरों पर ज़बरन मढ़ना ठीक नहीं है। उस की यह सुक्ति भी है कि भद्रजन सुसंगत के अलावा दूसरों के भिन्न मतों का भी कदर करें। यानि कि वे मानते थे कि समाज में मतभेद और भिन्नता मौजूद है, केवल इस यथार्थ को मानने से समाज में शांति व स्थायित्व कायम हो सकता है। शिक्षा के बारे में वे विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोच विचार करने की प्रेरणा देते थे, किताबों के कीड़ा बनने का विरोध करते थे।

कन्फ़्यूशियस की उक्तियों को उस के शिष्यों द्वारा 'कन्फ़्यूशियस उक्तियां'नामक पुस्तक में कलमबद्ध किया गया। उस के वैचारिक सिद्धांतों का उत्तरवर्ती कालों में व्यापक प्रसार और विकास किया गया, जो चीन की विचार परंपरा का प्रमुख भाग बन गया। कन्फ़्यूशियन विचारधारा आहिस्ते आहिस्ते चीन के पास पड़ोस के देशों में भी पहुंच गयी और फैल भी गयी है। उस का प्रभाव विश्व में भी पाया जा सकता है।

कन्फ़्यूशियस चीन के होते हैं, उस की सुक्तियां सभी चीनियों की जुबान पर हैं। अधिकांश चीनियों की चिन्तन प्रणाली कमोवेश उस की विचारधारा से प्रभावित है। कन्फ़्यूशियस विश्व भर के भी होते हैं, युनेस्को ने उसे विश्व के दस सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक विभूतियों में से एक घोषित किया है।

1 3
2

1、2. 孔子
कन्फ़्यूशियस
3. 山东曲阜孔庙中门
शानतुंग प्रांत के छ्वुफू में स्थित कन्फ़्यूशियस मंदिर का मध्य द्वार

“四书五经”与儒家思想

“चार ग्रंथियां एवं पंच शास्त्र” और कन्फ़्यूशियसवाद

“四书”在先秦时期就存在了，但是当时还没有“四书”这一说法，其中除了记录孔子言行的《论语》之外，还有《孟子》《大学》和《中庸》。《孟子》是记述儒家学派另一位代表人物孟轲的政治思想的书。而《大学》与《中庸》本来是《礼记》里的两篇文章，主要是讲如何做学问和如何修身的，到南宋时，著名学者朱熹把它们分别独立出来加以注解，和《论语》《孟子》一起，作为学习儒家经典的初级入门教材，叫作《四书章句集注》，也简称“四书”。“五经”是指《易经》《尚书》《诗经》《礼记》和《春秋》五部典籍。

明清时期，科举考试都是根据“四书五经”里面的文句出题，考生对字句的解释必须依照朱熹的《四书章句集注》等。于是，“四书五经”成为知识分子最重要的教科书，而“四书五经”中的儒家思想也主要通过这样的方式成为当时人们为人处世的准则。“四书五经”中蕴含的思想也深深地影响着现在的中国。

“चार ग्रंथियां एवं पंच शास्त्र” और कन्फ़्यूशियसवाद

“चार ग्रंथियां” छिन राजवंश काल से पूर्व ही मौजूद थीं, लेकिन उस समय उसे“चार ग्रंथियां” का नाम नहीं दिया गया था। चारों ग्रंथियों के नाम “कन्फ़्यूशियस उक्तियां” के अलावा “मेन्शियस”, “महा अध्ययन” और “मध्य मार्ग” है। “मेन्शियस” में कन्फ़्यूशियसवाद के एक दूसरे प्रतिनिधि मेन्शियस के राजनीतिक विचार वर्णित है। “महा अध्ययन” और “मध्य मार्ग” वास्तव में “लिची” शीर्षक पुस्तक के दो आलेख थे, जिन में शिक्षा व चरित्र सुधार के मत और पथ लिखे गए हैं। चीन के दक्षिण सोंग राजवंश काल में तत्कालीन प्रसिद्ध विद्वान चू शि ने उक्त चार ग्रंथों का अलग अलग समीक्षा करते हुए व्याख्यान किया और उन्हें कम्फ्युशिस-वाद के अध्ययन के लिए अनिवार्य पाठ्य सामग्री घोषित की, जो “चार ग्रंथियां” के नाम से मशहूर हो गयी। “पंच शास्त्र” शीर्षक पुस्तक में “चो राजा की भविष्यवाणी”, “दस्तावेज संग्रह”, “गेय कविता संग्रह”, “लिची” व “वसंत शरत” पांच ग्रंथ शामिल हैं।

मिंग व छिंग राज कालों में शाही परीक्षा के लिए प्रश्नावली सभी “चार ग्रंथियां एवं पंच शास्त्र” में से चुने जाते थे। परीक्षार्थियों को चू शि के व्याख्यानों के मुताबिक प्रश्नोत्तर देना पड़ता था। इस तरह “चार ग्रंथियां एवं पंच शास्त्र” उस जमाने के बुद्धि-जीवियों की मानक पाठ्य पुस्तक बन गयी। और उस में प्रस्तुत कन्फ़्यूशियस विचारधारा भी चीनियों के लिए लोकोचार के सिद्धांत व मानदंड माने जाते थे। “चार ग्रंथियां एवं पंच शास्त्र” में प्रस्तुत रीति-नीति और मान्यताएं आज भी कमोवेश चीनियों को प्रभावित करती हैं।

1 3
2

1.《论语》
“कन्फ़्यूशियस उक्तियां”
2. 八卦图
आठ त्रिवर्ण शकुन पुस्तक
3. 卦占吉凶
आठ त्रिवर्ण से शुभ या अशुभ की भविष्यवाणी

老庄与道家思想

लाओज़ी, ज्वांगज़ी और ताओ मत

中国道家思想的创始人是春秋末期的老子。老子，姓李，名耳，曾经做过周代管理政府藏书的史官。老子的著作《道德经》虽然只有5 000多字，但是对后来的中国人却产生了非常深远的影响。老子用“道”来说明宇宙万物的产生和演变，他告诉人们在思想和行为上也要遵循“道”的特点和规律，顺应自然，要以柔克刚，因为表面脆弱的东西往往本质坚强。

后来的庄子继承和发展了老子的思想。庄子，名周，曾经做过宋国“蒙”这个地方的漆园吏。庄子在他的著作《庄子》中，继承和发展了老子“道法自然”的观点，主张将外在的万物与自我等同起来，将生与死等同起来。庄子追求的是精神世界的超越和逍遥。因为老子和庄子的思想有很多相似性，所以后人习惯以“老庄”并称。

लाओज़ी, ज्वांगज़ी और ताओ मत

चीन के ताओ मत के प्रवर्तक वसंत-शरत काल की अंतिम अवधि में रहने वाले लाओज़ी थे। लाओज़ी का गोत्र नाम ली है और व्यक्तिगत नाम अरे, वे चो राजवंश के दरबारी पुस्तकालय के पदाधिकारी रह चुके थे। लाओज़ी की रचना "ताओ ते चिंग" अर्थात मार्ग व उस के मूल्य की ग्रंथी थी जिस में हालांकि मात्र 5000 शब्द हैं, पर इस का प्रभाव उत्तरवर्ती चीन के लोगों पर गहरा पड़ा। लाओज़ी ने "ताओ" यानी मार्ग का सिद्धांत पेशकर ब्रह्मांड की उत्पति और विकासक्रम का व्याख्यान किया और कहा कि लोगों को अपने चिन्तन व आचार में "ताओ" के नियमों का पालन करना चाहिए और प्रकृति से मेल खाना चाहिए। ताओ मत का

विश्वास है कि वस्तु देखने में क्षीण व नरम होती है, किन्तु असल में मजबूत व कठोर होती है, अतः इस से निबटने में विनम्र बरतना चाहिए।

ताओ मत के उत्तराधिकारी ज्वांगज़ी ने लाओज़ी के मत को विरासत में ग्रहण कर आगे विकसित भी किया। ज्वांगज़ी का गोत्र नाम चो है, वे सोंग राज्य के मेङ नगरी के चित्रकला अधिकारी रह चुके थे। ज्वांगज़ी ने अपनी रचना "ज्वांगजी" में लाओज़ी के "ताओ मत" के प्रकृति सिद्धांत का ग्रहण कर उस का विकास भी किया और यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि प्रकृति की तमाम वस्तुएं स्वत्व के बराबर होती हैं, प्राण और मृत्यु बराबर होते हैं। ज्वांगज़ी की आकांक्षा थी कि मानव का आध्यात्मिक संसार मुक्त होकर स्वतंत्र होता है। वैचारिक समानता के कारण लाओज़ी और ज्वांगज़ी को समान पंथ में रखकर चीनी लोग उन्हें "लाओ-ज्वांग" कहलाते हैं।

1 | 2

1. 老子
   लाओज़ी
2.《庄子》
   "ज्वांगज़ी"

佛学思想

बौध धर्म

早在汉代，产生于印度的佛教就已经传入中国。佛教在中国的发展过程中不断中国化，成为深刻地影响着中国人的宗教思想体系——佛学思想。

隋唐时期是佛教中国化的重要时期。这一时期，随着国家的统一、经济的发展和文化交流的日益频繁，佛学获得了空前的发展。唐代统治者实行儒、佛、道并行的政策。佛学在与中国传统文化融合的过程中，吸收了儒家和道家的思想，形成了一些中国化的佛学宗派。禅宗是其中最有生命力的一派。佛学的思辨哲学弥补了传统思想直观朴素的不足，丰富了中国文化。

http://www.purpleculture.net

बौध धर्म

बहुत पहले यानि चीन के हान राजकाल में ही बौध धर्म भारत से चीन आया था। चीन में फैलने के दौरान बौध धर्म का निरंतर चीनी-करण हुआ और उस का चीनियों की धार्मिक मान्यता व जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा और चीन का एक प्रमुख धर्म भी बना।

श्वी और थांग राजवंश कालों में बौध धर्म का चीन में बड़ा विकास हुआ। इस दौरान देश के एकीकृत होने के साथ साथ आर्थिक विकास और सांस्कृतिक आवाजाही फलता फूलता रहा, जिस से प्रेरित होकर बौध धर्म का अभूतपूर्व विकास हुआ। थांग शासकों ने देश में कन्फ़्यूशियसवाद, बौध धर्म व ताओ मत का समानांतर समर्थन करने की नीति अपनायी। बौध धर्म और चीनी पारंपरिक संस्कृति के समावेश की प्रक्रिया में कन्फ़्यूशियसवाद और ताओ मत का ग्रहण भी किया गया, जिससे चीनी विशेषता का बौध संप्रदाय विकसित हुआ। ध्यान संप्रदाय इस की एक सब से सशक्त शाखा है। बौध धर्म के द्वंद्व दर्शन ने चीन के पारंपरिक प्रत्यक्षवादी दर्शन की कमी की भरपाई कर चीनी संस्कृति को समृद्ध कर दिया है।

1 | 2 / 3

1. 敦煌佛像壁画
   त्वनह्वांग की बुद्ध मूर्तियों का भिति चित्र
2. 如来佛像
   भगवान बुद्ध की मूर्ति
3. 合掌手
   हाथ जोड़ने की मुद्रा